स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड के मानव्य विद्यावाचस्पती (पीएच.डी. हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध - प्रबंध की रुपरेखा

शोध विषय

"कृष्णा सोबती के उपन्यासों में मध्यवर्गीय नारी जीवन"

शोध- छात्र

श्री. विठ्ठल हरिबा वाघमारे (एम.ए. एम्.फिल्.)

सी.बी.खेडगीज् बसवेश्वर सायन्स, आर.व्ही.कॉमर्स एवं आर.जे. आर्टस महाविद्यालय, अक्कलकोट.

शोध-निर्देशक

डॉ.मा.ना. गायकवाड (एम.ए.एम्.फिल्. पीएच्.डी.)

कै.व्यंकटराव देशमुख महाविद्यालय, बाभुलगांव.

त.जि.लातुर

नवम्बर -२०१७

भूमिका

स्वातंत्र्योत्तर काल में हिंदी साहित्य क्षेत्र में उपन्यास एक महत्वपूर्ण एवं लोकप्रिय विधा है। उपन्यास, कहानी, कविता, नाटक, निबंध इन विधाओं में उपन्यास को गद्य का महाकाव्य माना जाता है। क्योंकि उपन्यास में प्रबंध काव्य का सुसंगठित वस्तु विन्यास, महाकाव्य जैसी व्यापकता, गितों की तरह मार्मिकता, नाटकों जैसा प्रभाव तथा छोटी कहानी की कलात्मकता एक साथ मिलती है। भारतीय समाज में व्याप्त स्त्री-जीवन आरंभ से ही साहित्य का विषय रहा है। नारी की लडाई मानवीय अधिकारों के लिए है। किसी पुरुष के विरोध में नही। क्यूँ कि नारीवादी साहित्य की आलोचना यदि नारी आलोचक करती है, तो वह सच्चाई और प्रामाणिकता की आलोचना होगी। क्योंकि बलात्कार, अत्याचार, तथा प्रसूती वेदना को अभिव्यक्त करने वाले साहित्य को स्त्री ही समझ सकती है। पुरुष द्वारा होनेवाली नारीवादी साहित्य की आलोचना को हम पूर्ण रुप से सत्य नहीं कह सकते। वर्तमान समाज तथा राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में नारी का जीवन आज साहित्य का ही नहीं बल्की लोगों के बीच चर्चा का भी विषय बना है।

विद्यार्थीदशा से ही हिंदी कथा-साहित्य का आकर्षण मुझे रहा है। हिंदी विषय में अध्यापन कार्य करने के कारण हिंदी विषय में शोध-कार्य करना मैं मन-ही-मन सोचता रहा। इसी सीलसीले में कृष्णा सोबती, कृष्णा अग्नीहोत्री, उषा प्रियंवदा, मन्नु भंडारी, चित्रा मुदगल आदि लेखिकाओं का साहित्य पढा इसके उपरान्त कष्णा सोबती के काहानियों मे 'मध्यवर्गीय नारी जवीन' इस विषय पर लघु शोध-कार्य करना निश्चित किया। कृष्णा सोबती का कहानिसंग्रह 'बादलों के घेरे' पढने के उपरान्त उनके द्वारा रचित 'जिंदगीनामा, डार से बिछुडी, मित्रों मरजानी, यारों के यार तीन पहाड, सूरजमुखी अंधेरे के' आदि उपन्यास पढे।

इस साहित्य के साथ-साथ लेखिका द्वारा सम्पादित कुछ अन्य किताबे भी पढने को मिली। अध्ययन करते समय कृष्णा सोबती के साहित्यिक व्यक्तित्व को नजदीक से जानने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। स्वातंत्र्योत्तर काल की लेखिकाओं में कृष्णा सोबती की एक अलग छवि महसुस होती है। कृष्णा सोबती अपने समग्र साहित्य के माध्यम से एक सुविख्यात लेखिका के रुप में पाठकों के सम्मुख आती है। वे बीसवीं सदी की एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर है।

कृष्णा सोबतीने अपने उपन्यास के माध्यमसे अपने काल के समाज के रीति - रिवाजों, रुढियों एवं लोककथाओं का यथार्थ चित्रण किया है । कृष्णा सोबती का समग्र साहित्य उनके अनुभव की उपज है । वे जन्म को नहीं कर्म को श्रेष्ठ मानती है । इसलिए समाज में फैले अंधविश्वासों, रुढियों का भंडाफोड करके प्रगतिशील विचारों का प्रचार - प्रसार कर समाज को सही दिशा देना उनके सृजन का मुख्य उद्देश्य रहा है । भारतीय गांवों की स्थिती, गांव की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, और राजनैतिक स्थितियाँ तथा उसमें नारी की जिंदगी को कृष्णा सोबती ने अपनी आँखों से देखा है। इसलिए उनके उपन्यासों में नारी चित्रण को अधिक स्थान मिला है। एम.फिल. का अध्ययन पूरा होने पर मैंने सोचा कि क्यों न आगे चलकर 'कृष्णा सोबती के उपन्यासों में मध्यवर्गीय नारी जीवन ' इस विषय पर अपना शोध कार्य करुँ। उस समय यह भी ज्ञात हुआ की अबतक कृष्णा सोबती के उपन्यासों पर जो शोध कार्य संपन्न हुआ है उसमें 'मध्यवर्गीय नारी जीवन' को लेकर शोध कार्य नही हुआ।

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में मैंने ग्रामीण नारी, आधुनिक नारी, मध्यमवर्गीय नारी की व्यथा, पीडा, दु:ख, दर्द आदि को पढा और मेरा संवेदनशील मन जागृत हुआ। मैं तुरंत ही डॉ. गायकवाड मा.ना. के पास पहुँचा और प्रस्तुत विषय पर चर्चा हुई। चर्चा के उपरान्त मुझे न केवल अनुमति मिली बल्की प्रेरणा भी प्राप्त हुई। इसके उपरान्त कृष्णा सोबती के उपन्यासों में 'मध्यवर्गीय नारी जीवन' मेरे शोध प्रबंध का मुख्य विषय बना। इस विषय के अध्ययन के सुविधा हेतू निम्मलिखित अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय मध्यवर्गीय नारी जीवन सिध्दांत और स्वरुप के संबंधी है। द्वितीय अध्याय कृष्णा सोबती के व्यक्तित्व और कृतित्व संबंधी है। तृतीय अध्याय हिंदी उपन्यासों में व्यक्त मध्यवर्गीय नारी जीवन को लेकर है। चतुर्थ अध्याय कृष्णा सोबती के उपन्यासों में व्यक्त मध्यवर्गीय नारी जीवन तथा मध्यवर्गीय नारी विषयक समस्याऐंसे संबंधी है। पंचम अध्याय कृष्णा सोबती के उपन्यासों की भाषा-शैली संबधी है। अंतीम षष्ठम अध्याय में उपसंहार तथा निष्कर्ष होगा।

कृष्णा सोबती के उपन्यासों मे मध्यवर्गीय नारी जीवन

विषयानुक्रमणिका

१. प्रथम अध्याय :

मध्यवर्गीय नारी जीवन : सिध्दांत और स्वरुप

२. द्वितीय अध्याय :

कृष्णा सोबती : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

३. तृतीय अध्याय :

हिंदी उपन्यासों में मध्यवर्गीय नारी जीवन

४. चतुर्थ अध्याय :

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में मध्यवर्गीय नारी जीवन

५. पंचम अध्याय :

कृष्णा सोबती के उपन्यासों की भाषा- शैली

६. षष्ठम अध्याय :

निष्कर्ष

शोध के उद्देश :

- मध्यवर्गीय नारी जीवन का अर्थ एवं स्वरुप जानना ।
- कृष्णा सोबती के व्यक्तित्व और कृतित्व को समझना।
- हिंदी उपन्यासों में अभिव्यक्त मध्यवर्गीय नारी जीवन को जानना।
- कृष्णा सोबती के उपन्यासों में व्यक्त मध्यवर्गीय नारी जीवन को समझना।
- कृष्णा सोबती के उपन्यासों की भाषा-शैली का अध्ययन करना।

शोध का महत्व :

- कृष्णा सोबती के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की जानकारी मिलती है।
- मध्यवर्गीय जीवन का अर्थ एवं स्वरुप का पता चलता है।
- हिंदी उपन्यासों में व्यक्त मध्यवर्गीय नारी जीवन को हम समझ सकते है।
- कृष्णा सोबती के उपन्यासों में व्यक्त मध्यवर्गीय नारी जीवन को हम समझ सकते है।
- कृष्णा सोबती के उपन्यासों की भाषा की जानकारी मिलती है।

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में मध्यवर्गीय नारी जीवन

प्रथम अध्याय :-

मध्यमवर्गीय नारी जीवन : सिध्दांत और स्वरुप

१.१. प्रस्तावना

१.२. मध्यवर्ग का अर्थ

१.३. मध्यवर्ग : परिभाषा एवं स्वरुप

द्वितीय अध्याय :-

कृष्णा सोबती : व्यक्तित्व और कृतित्व :

२.१ प्रस्तावना

२.२ व्यक्तिमत्व

२.२.१. जन्म

२.२.२. बचपन

२.२.३. शिक्षा

२.२.४. माता-पिता

२.२.५. परिवारिक जीवन

२.२.६. गाँव से लगाव

२.२.७. स्वभाव एवं विचारधाराएँ

२.३. कृतित्व

२.३.१. उपन्यास

२.३.१.१. डार से बिछुडी

२.३.१.२. मित्रो मरजानी

२.३.१.३. सूरजमुखी अँधेरे के

२.३.१.४. जिंदगीनामा : जिन्दा रुख

२.३.१.५. दिलो-दानिश

२.३.१.६. समय सरगम

२.३.२. कहानी संग्रह

२.३.२.१. यशि के यार तीन पहाड

२.३.२.२. बादलो के घेरे

२.३.२.३. ऐ लडकी

२.३.३. संस्मरण

२.३.३.१. हम हशमत-एक

२.३.३.२. हम हशमत -दो

२.३.४. विविध

२.३.४.१. सोबती एक सोहबत

२.३.४.२. शब्दों के आलोक में

२.३.४.३. सोबती वैद्य संवाद

२.३.५. स्वतंत्र लेख

२.३.६. पत्र - पत्रिका

तृतिय अध्याय :-

हिंदी उपन्यासों में मध्यवर्गीय नारी जीवन

३.१. प्रस्तावना

३.२. प्रेमचंदपूर्व उपन्यासों में मध्यवर्गीय नारी जीवन

३.३. प्रेमचंद युगीन उपन्यासों में मध्यवर्गीय नारी जीवन

३.४. प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों में मध्यवर्गीय नारी जीवन

चतुर्थ अध्याय :-

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में मध्यवर्गीय नारी जीवन

४.१. प्रस्तावना

४.२. डार से बिछुडी उपन्यास में मध्यवर्गीय नारी जीवन

४.३. मित्रो मरजानी उपन्यास में मध्यवर्गीय नारी जीवन

४.४. सूरज मुखी अँधेरे के उपन्यास में मध्यवर्गीय नारी जीवन

४.५. जिंदगीनामा: जिन्दा रुख उपन्यास में मध्यवर्गीय नारी जीवन

४.६. दिलो- दानिश उपन्यास में मध्यवर्गीय नारी जीवन

४.७. समय सरगम उपन्यास में मध्यवर्गीय नारी जीवन

चतुर्थ अध्यायः-

पंचम अध्याय :-

कृष्णा सोबती के उपन्यासों की भाषा-शैली।

५.१. प्रस्तावना

५.२. भाषा की संरचना एवं स्वरुप

५.२.१. साहित्यिक भाषा

५.२.२. हिंदी की बोलियों का प्रयोग

५.२.३. प्रसंगानुकूल भाषा

५.२.४. लाक्षणिक भाषा

५.२.५. अलंकृत भाषा

५.२.६. पात्रानुकूल भाषा

५.२.७. मुहावरे एवं कहावते.

५.३. उपन्यासों में शब्द संरचना

५.३.१. भाषा में विभिन्न शब्दों का प्रयोग

५.३.१.१. संस्कृत शब्द

५.३.१.२. अरबी शब्द

५.३.१.३. फारशी शब्द

५.३.१.४. उर्दु शब्द

५.३.१.५. देशज शब्द

५.३.१.६. विदेशी शब्द

५.४. कृष्णा सोबती के उपन्यास शैलियाँ

५.४.१. वर्णनात्मक शैली

५.४.२.विश्लेषणात्मक शैली

५.४.३.संवादात्मक शैली

५.४.४. पात्रात्मक शैली

४.५.५.कथात्मक शैली

४.५.६. आत्मकथात्मक शैली

४.५.७. डायरी शैली

षष्ठम अध्याय :-

निष्कर्ष।

यहअंतिम अध्याय है, जिसमे संपूर्ण अध्यायों का निष्कर्ष होगा।

संदर्भ ग्रंथ

अ.मूल ग्रंथ

१. डार से बिछुडी - कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

२. मित्रो मरजानी- कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

३. सूरजमुखी अँधेरे के- कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

४. जिंदगीनामा : जिन्दा रुख- कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

५. दिलो दानिश- कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

६. समय सरगम- कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

७. यारों के यार तीन पहाड- कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

८. बादलों के घेरे- कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

९. ऐ लडकी- कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

१०. हम हशमत-एक- कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

११. हम हरामत- दो- कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

१२. सोबती वैद्य सोहब- कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

१३. शब्दो के अलोक में- कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

१४. सोबती वैद्य संवाद- कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

ब) आधार ग्रंथ

१. हिंदी उपन्यास : समकालीन परिदृश्य, रामदरश मिश्र, लिपि, दिल्ली

२. आधुनिक हिंदी उपन्यास, विवेकीराय, राजकमल प्रकाशन,दिल्ली

३. कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में स्त्री का स्वरुप डॉ अनिता, जवाहर पुस्तकालय, हिंदी पुस्तक प्रकाशक एवं वितरक, मथुरा (उत्तर प्रदेश)

४. कृष्णा सोबती का कथा साहित्य एवं नारी समस्याएँ, डॉ. शहेनाज जाफर बासमेह, अभय प्रकाशन, कानपुर

५. कृष्णा सोबती व्यक्ति एवं साहित्य- डॉ. ब्रिजिट पॉल, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा

६. कृष्णा सोबती के उपन्यासों मे प्रतिबिंबित नारीजीवन- डॉ. सुलोचना नरसिंगराव अंतरेड्डी, अमन प्रकाशन, कानपुर

शोध निर्देशक
डॉ. मा.ना. गायकवाड
कै.व्यकटराव देशमुख महाविद्यालय,
बाभुळगांव त.जि. लातुर

शोध छात्र
(श्री. व्ही.एच्. वाघमारे)
सी.बी. खेडगीज् बसवेश्वर सायन्स,
आर.व्ही. कॉमर्स एवं आर.जे. आर्टस्,
महाविद्यालय, अक्कलकोट.